(परिचय)
कृष्णा
श्री बृज राज स्वामी मन्दिर नूरपुर
हिमाचल प्रदेश का प्रमुख द्वार प्राकृतिक पहाड़ियों के मनमोहक दृश्य स्वस्थ जल-वायु से संयुक्त समुन्द्र तल से 2125 फुट की ऊँचाई पर बसा नगर नूरपुर पठानकोट कुल्लू मार्ग पर स्थित आज भी ऐतिहासिक पृष्ठों से जुड़ा है। इस नगर का पुराना नाम धमड़ी था। नूरजहाँ के आगमन पर इस मनमोहक क्षेत्र का नाम नूरपुर पड़ा। श्री बृज राज मन्दिर जो पुराना दरबार-ए-खास था। राजा जगत सिंह ने इस दरबार-ए-खास को मन्दिर का रुप दिया तथा भितिकाओं पर कृष्ण लीलाओं का चित्र-चित्रण करवाया था। इस किवदन्ता से ई.सन 1619 से 1623 के मध्य एक बार राजा जगत सिंह अपने पुरोहित के साथ चितोड़गढ़ (राजस्थान) के राजा के आमन्त्रण पर गये राजा तथा पुरोहित को जो कमरा रहने के लिए दिया उस के साथ एक मन्दिर था। आधी रात के समय मन्दिर में घुंघरुओं की आवाजें तथा संगीत की धुनें कानों में पड़ी। राजा ने दरवाजा खोल कर देखा कि एक औरत बन्द कमरे में भजन गाती हुई नाच रही थी। पुरोहित तथा राजा के मन में विचार आ गया पुरोहित ने राजा से कहा कि राजन जब यहाँ से जाना है उपहार में राजा से यह मूर्तियाँ ही मांगना यह मूर्तियाँ साक्षात भगवान कृष्ण तथा मीरा का रुप हैं। राजा जगत सिंह ने ऐसा ही किया विदाई के समय उपहार में यही मूर्तियाँ मांगी चितोड़ गढ़ के राजा से सम्मान पूर्वक यह मूर्तियां तथा मौलसरी का पेड़ उपहार के रुप में लाकर श्री बृज राज मन्दिर में स्थापित करवाया जो राजस्थानी शैली की काले संगमरमर की कृष्ण मूर्ति आज भी जीती जागती मिसाल हैं।